योजना दस्तावेज

"ट्राउट मछली पालन –एक रोजगारपरक व्यवसाय"

ट्राउट फार्मिंग विपणन एवं प्रबंन्धन महासंघ लि0,
देहरादून

ट्राउट मछली : शीतलजल की रानी

साधारण नाम :

ट्राउट

प्रमुख प्रजातियॉ :

रेनबो ट्राउट एवं ब्राउन ट्राउट

ट्राउट मछली जेनेरा ओन्कोरिन्कस, साल्मो और साल्वेलिनस से सबंधित है, जो कि साल्मोनिडे परिवार के सभी सबफैमिली साल्मोनिनाई हैं। विभिन्न वातावरणों में रहने वाले ट्राउट में विभिन्न रंग और पैटर्न हो सकते हैं। अधिकतर, ये रंग और पैंटर्न परिवेश के आधार पर छधावरण के रूप में बनते हैं, और जैसे–जैसे मछली विभिन्न आवासों में जाती है, बदल जाएगी। ट्राउट में, या समुद्र से लौटी नई, बहुत चांदी सी दिख सकती है, जबकि एक छोटी सी धारा या झील में रहने वाली एक ही मछली के निशान और अधिक ज्वलंत रंग हो सकते हैं। सामान्य तौर पर, ट्राउट जो प्रजनन करने वाले होते हैं, उनका रंग बेहद तीव्र होता है और वे स्पॉनिगं सीजन में बाहर पूरी तरह से अलग मछली की तरह दिख सकते हैं। एक विशिष्ट नस्ल से संबंधित किसी विशेष रंग पैटर्न को परिभाषित करना लगभग असंभव है। ट्राउट आमतौर पर ठंडे (50^0–60^0 फारेनहाइट या 10^0–16^0 िसेल्सियस),शीतलजल धाराओं और झीलों में पाए जाते हैं। युवा ट्राउट को ट्राउटलिंग या फ्राई कहा जाता है। ये पूरे उत्तरी अमेरिका, उत्तरी एशिया और यूरोप में अलग–अलग प्रजातियो के रूप में पाये जाते है। भारत में अधिकांश रूप से रेनबो ट्राउट मछलियो का पालन किया जा रहा है।

साधारण नाम :

रेनबो ट्राउट

वैज्ञानिक नाम :

ओन्कोरिन्कस मायकिस (Oncorhynchus mykiss)

रेनबो ट्राउट (ओन्कोरिन्कस मायकिस) उत्तरी अमेरिका, उत्तरी एशिया और यूरोप की मूल प्रजाति है। इसे 18 वीं शताब्दी के मध्य में हिमालय और प्रायद्वीपीय क्षेत्रों पर औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय जलधाराओं में प्रस्तुत किया गया था, जहां हिमालय की उच्च–ऊंचाई, अद्वितीय पर्वत श्रृंखलाओं द्वारा पर्याप्त मात्रा में और पर्याप्त गुणवत्ता में शीतलजल की आपूर्ति होती है। इनमे से कई भैगोलिक रूप से कार्य करने हेतु जटिल क्षेत्र हैं लेकिन वे ट्राउट के लिए उपयुक्त नदियों, नालों, झीलों और सहायक नदियों के रूप में उत्कृष्ट बहुतायात में अवसर भी प्रदान करते हैं। भारत में जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रद`श तथा क`रल (आ ंशिक क्षेत्र) जैसे पर्वतीय राज्य ट्राउट मत्स्य पालन के लिए उपयुक्त स्थान हैं।

भारत में ट्राउट फार्मिंग की स्थापना और विस्तार को विभिन्न अंर्तराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सर्मथन दिया गया। यूरोपीय संघ जिसने स्कॉटलैंड के फिश फार्म्स डेवलपमेंट इंटरन`शनल और डेनमार्क के रैंबेल और हनीमैन के सहयोग से जम्मू और कश्मीर में एक परियोजना में सहायता की। 1984 में हॉलैंड के ओटेवेंजर से उपकरण और मशीनरी की खरीद की गई थी। इसके अतिरिक्त 1989 के दौरान हिमाचल प्रदेश राज्य में, नार्वेयन सरकार ने प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और उत्पादन चरण के लिए एक परियोजना को वित्त पोषित किया। इस परियोजना ने हिमाचल प्रदेश में ट्राउट गतिविधियों की स्थापना की गयी। रनेबो ट्राउट फार्मिंग के तहत मत्स्य स्वास्थ्य अध्ययन नामक एक अन्य परियोजना को ओस्लो, नॉर्वे के राष्ट्रीय पशु चिकित्सा संस्थान के सहयोग से हिमाचल प्रदेश में लागू किया गया था।

हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर में विभिन्न देशो द्वारा तकनीकी हस्तांतरण आदि के सहयोग से ट्राउट फार्मिंग स्थापित की गयी है। उत्तराखण्ड राज्य में गढवाल नरेश नरेन्द्र शाह द्वारा ट्राउट मछली की स्वादिष्टता को देखते हुए कल्डियाणी, उत्तरकाशी में राज्य की प्रथम ट्राउट हैचरी का निर्माण कराया गया। इसके उपरान्त विभिन्न प्रयासो से नदियो आदि जलधाराओ में ट्राउट मत्स्य बीज संचय किये गये जिसके फलस्वरूप इनकी संख्याओं में वृद्वि की जा सकी। वर्ष 1994 में उत्तराखण्ड राज्य अन्तर्गत चमोली जनपद में बैंरागना मत्स्य प्रक्षेत्र की स्थापना हुयी एवं अथक प्रयासो क उपरान्त यहॉ ट्राउट मत्स्य बीज उत्पादन का कार्य प्रारम्भ किया गया। वर्ष 2013–14 में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के माध्यम से निजी व्यक्तियो की भूमि पर ट्राउट रेसवेजो का निर्माण प्रारम्भ हुआ एवं धीरे धीरे पर्वतीय जनपदो में इसको व्यवसाय के रूप में अपनाये जाने लगा।

पूरे विश्व में यूरोपियन देश ट्राउट मछली का अधिकतम उत्पादन कर रहे है जबकि जमू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश एंव सिकिक्म के उपरान्त उत्तराखण्ड राज्य ट्राउट मत्स्य उत्पादन में चौथा स्थान रखता है।

रेनबो ट्राउट प्रोफाईल :–

रेनबो ट्राउट मांस हल्का एवं एक अधपका अखरोट जैसे स्वाद के साथ होता है। मांस कोमल, परतदार और मुलायम होता है। रेनबो ट्राउट का मांस सफेद, गुलाबी या नारंगी रंग का होता है। जब मछली को पकाया जाता है तो इसमें एक नाजुक परत होती है और रंग पीला होता है। ट्राउट के फिललेट्स दृढ़, लचीला और फ्रेश होने चाहिए। रेनबो ट्राउट की त्वचा काली, चमकदार और फिसलन वाली होनी चाहिए।

रेनबो ट्राउट के पोषण सम्बन्धी तथ्य :–

Calories	138
Fat Calories	49
Total Fat	5.4g
Saturated Fat	1.6g
Cholestrol	59mg
Sodium	35mg
Prtoein	20.9g
Omega3	0.09gm

रंनबो ट्राउट की फार्मिंग कैसे करे –

रेनबो ट्राउट फार्मिंग हेतु रेसवेज का निर्माण किया जाना होगा। एक रेसवेज का आदर्श क्षेत्रफल 50 क्यूबिक मीटर है।

1) साईट चयन

पानी का तापमान	18° से कम
स्मुद्री तल से ऊँचाई	4000 फीट से अधिक
पहुँच	सुलभ
पानी की आवश्यकता	न्यून्तम 25 लीटर प्रति सैकेण्ड
भूमि की स्थिति	आपदाग्रस्त क्षेत्र से बाहर

- ट्राउट फार्म की स्थापना के लिए स्थल के चयन के लिए जल सबसे महत्वपूर्ण निर्णायक मानदडं है।
- वाणिज्यिक ट्राउट उत्पादन के लिए साइट पर उच्च गुणवत्ता वाले जल की वर्षभर आपूर्ति होनी चाहिए।
- रेसवेजो में जलापूर्ति वसंत या बर्फीली धारा से हो सकती है और जल गंदगी से मुक्त होना चाहिए।

2) अवसरंचना निर्माण (रेसवेज निर्माण)

ट्राउट फार्मिंग के लिए सीमेंटेड रेसवेज की आवश्यकता होती है। आयताकार टैंक वृत्ताकार टैंक/हौज से बेहतर परिणाम देते हैं। ट्राउट रेसवेज का किफायती आकार 12–15 × 2–3 × 1.2–0.5 मीटर है। रेसवेज में एक इनलेट और जल के अतिप्रवाह के लिए एक आउटलेट होना चाहिए, जो कि स्टॉक की गई मछलियो के बाहर निकलने को रोकने हेतु वायर मेश स्क्रू के साथ जोड़ा गया हो।

रेसवेज के तल पर एक पाईप होना चाहिए जिससे कि समय–समय पर मत्स्य निकासी के साथ–साथ रेसवेज की सफाई की सुविधा भी मिल सके।

3) <u>अवस ंरचना (रेसवेज) हेतु जलापूर्ति</u>

ट्राउट फार्म में पानी की आपूर्ति फिल्टर आधारित सेडिमेंटेशन टैंक के माध्यम से होनी चाहिए। विशेष रूप से मानसून के मौसम में जब पानी गंदा होता है तो गाद की समस्या उत्पन्न होती है जो ट्राउट फार्मिंग हेतु अच्छा नहीं होता है। ट्राउट फार्मिंग के लिए आवश्यक जल की मात्रा स्टॉकिंग घनत्व, मछली के आकार के साथ–साथ पानी के तापमान से स ंबंधित होती है इसलिए, पानी के प्रवाह को बहुत सावधानी से नियंत्रित करना आवश्यक है।

उदाहरण के लिए, 30,000 फ्राइज को लगभग 15 लीटर/मिनट के जल प्रवाह की आवश्यकता होती है, 250 ग्राम से नीचे की मछली को 10–12 सेलिस्यस पर 0. 5 लीटर/किग्रा/मिनट के जल प्रवाह की आवश्यकता होती है। उपर्युक्त किफायती आकार के टैंक का जल प्रवाह 52 क्यूबिक मीटर/घंटा होना चाहिए। इस प्रकार, जल प्रवाह को विनियमित किया जाता है ताकि मछलियां एक जगह इकट्ठा न हों और तेज गति से न चलें। ट्राउट के उत्पादन में तापमान और पानी का प्रवाह भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पानी का पीएच 12^0–15^0 सेल्सियस तापमान के साथ 7–8 की सीमा में होना चाहिए।

4) <u>ट्राउट फार्मिंग हेतु जल की भौतिक–रासायनिक आवश्यकताये</u> –

- **जलीय तापमान** – ट्राउट मछली 5^0–18^0 सेल्सियस की तापमान सीमा के अन्दर अच्छी तरह से बढ़ती है हॉलाकि ट्राउट की अधिकतम वृद्वि 8–18 डिगरी सेल्सियस की तापमान सीमा में दर्ज की गयी है।
- **पी०एच०** – ट्राउट फार्मिंग जल की पी०एच० रेंज 7–8 आदर्श है।
- **मत्स्य बीज संचय घनत्व** – यह जल की आपूर्ति, जलीय तापमान, जल की गुणवत्ता और मत्स्य आहार आदि पर निर्भर करता है। यदि जलीय तापमान 20^0 सेल्सियस से अधिक है तो स्टॉकिंग घनत्व अनुशंसित घनत्व से कम रखा जाना चाहिए।
- **जल में मैलापन** – ट्राउट फार्मिंग हेतु क्रिस्टल साफ जल बिना किसी प्रदूषण के होना आवश्यक है।

<u>5) प्री–स्टॉक प्रबन्धन</u>

- मत्स्य बीज/फिंगरलिंग प्राप्त होने से पूर्व ही रेसवेजो की अच्छे से सफाई की जाय।
- टैंको की सफाई के उपरान्त स्रोत से रेसवेज तक की पूर्ण जलापूर्ति को चैक किया जाय।
- मछली के बीज का परिवहन अनुकुलित तापमान के साथ पानी में किया जाना चाहिए।
- <u>मत्स्य बीज परिवहन के उपरान्त रेसवेज में संचय</u> – ट्राउट मछली पानी के तापमान में बदलाव के प्रति संवेदनशील है विशेषत जब यह ठडें से गर्म हो। मछली जितनी छोटी होती है उतनी ही थर्मल शॉक के लिए संवेदनशील होती है, और विशेष रूप से गर्म थर्मल शॉक के लिए अतिसंवेदनशील होती है। इसलिए सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए 0.5^0 सेल्सियस/मिनट के चरणों में परिवहन पानी के तापमान को धीरे–धीरे बढ़ाना या कम करना महत्वपूर्ण है।
- उचित अनुकूलन तापमान में परिवहन के बाद मछली के बीज को रेसवेज में संचय/ छोड़ना भी महत्वपूर्ण है। इसलिए जिस बाल्टी या बेसिन में मछलियों को स्थानांतरित किया जाता है, उसे पानी में धीरे धीरे डुबोया जाना चाहिए जहां मछलियों को उचित अनुकूलन के लिए छोड़ दिया जाय।

6) <u>पोस्ट स्टॉक प्रबन्धन</u>

- **जलीय तापमान** – 5 से 18 डिगरी सेल्सियस
- **घुलित ऑक्सीजन**– 5.8 से 9.5 मि०ग्रा० / लीटर
- ट्राउट फार्मिंग हेतु स्वच्छता एक महत्वपूर्ण कारक है। मछली को 10 प्रतिशत फौरमेलिन अथवा 4 पी.पी.एम. पोटेशियम परमेगनेट ($KMnO_4$) घोल से समय–समय पर डिप ट्रीटमेंट द्वारा साफ और कीटाणुरहित किया जाना चाहिए।
- यदि कोई मछली संक्रमित पायी जाती है तो उसे रेसवेज से तुरंत हटा देना चाहिए और बीमारी के सम्बन्ध में मात्स्यिकी विशेषज्ञ से परामर्श लेकर उचित देखभाल की जानी चाहिए।
- **मत्स्य आहार** – वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के मत्स्य आहार बाजार में उपलब्ध है। ट्राउट मछली में वृद्वि हेतु आहार में एनीमल प्रोटीन होना वृद्वि दर के लिए महत्वपूर्ण कारक है। अंगुलिका / फिंगरलिंग को शरीर के वजन के 4–6 प्रतिशत की दर से मत्स्य आहार देना आवश्यक है परन्तु मछलियो को आहार देने के लिए पानी के तापमान पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए। 10^0–12^0 सेल्सिय के पानी के तापमान पर, 6 प्रतिशत का फीडिंग शेडयूल उत्तम होता है, लेकिन जब यह 15^0 सेल्सिय तक बढ़ जाता है, तो फीडिंग शेडयूल को 4 प्रतिशत तक कम कर दिया जाना चाहिए। ट्राउट मत्स्य आहार में प्रोटीन 40–45 प्रतिशत तथा फैट 10–18 प्रतिशत तक होने पर ससमय वृद्वि दर प्राप्त की जा सकती है जो औसतन प्रति माह 40–50 ग्राम है।

7) <u>उत्पादन एवं उत्पाद</u>

एक रेसवेज इकाई से औसतन 8–10 कुन्तल तक ट्राउट उत्पादन प्राप्त हो जाता है जो लगभग 6–8 माह में तैयार हो जाता है। ट्राउट मछली का वजन 250–350 ग्राम होने पर विक्रय करने सलाह दी जाती है। यही आकार / वजन ट्राउट मछली का टेबल साईज कहा जाता है। इस आकार से आगे मछली की वृद्वि दर धीमी होती है और पालन–पोषण अलाभकारी है। रेनबो ट्राउट का सीमित उत्पादन होने के कारण फ्रेश / ताजा खपत अधिक है। फ्रेश / ताजा खपत के अलावा, ट्राउट के विभिन्न प्रकार के उत्पादों को स्मोक्ड, साबुत, फिल्लेट, केन्ड, फ्रोजन को स्टीम्ड, फ्राइड, ब्रोइल्ड, उबला हुआ अथवा माइक्रो–वेव्ड और बेक कर उपयोग में लाया जाता है।

<u>उत्तराखण्ड राज्य में ट्राउट फार्मिंग</u>

उत्तराखण्ड राज्य में वन एवं जल प्रमुख प्राकृतिक संसाधन है। उत्तराखण्ड राज्य के 4500 फीट से अधिक ऊॅचाई के क्षेत्रो में पालन हेतु मत्स्य पालको के मध्य ट्राउट मछली एक उपर्युक्त प्रजाति है जो ऐसे सुदूर क्षेत्रो में अधिकतम आय सृजन का लाभ उपलब्ध करा रही है। अधिक ऊॅचाई वाले क्षेत्रो में रोजगार के सीमित संसाधन होने के कारण ट्राउट फार्मिंग एक उत्तम विकल्प के रूप में उपलब्ध हुआ है। वर्ष 1994 के उपरान्त मत्स्य प्रक्षेत्र बैरांगना की स्थापना से ट्राउट मत्स्य बीज उत्पादन राज्य में प्रारम्भ हुआ जिससे प्राकृतिक जलधाराओं में संरक्षण एवं ट्राउट की संख्या बढाये जाने हेतु संचय के कार्य किये गये। वर्ष 2013–14 में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के माध्यम से निजी क्षेत्र में ट्राउट फार्मिंग का
कार्य प्रारम्भ किया गया। वर्ष 2016–17 से भारत सरकार की नील क्रांति योजना से ट्राउट फार्मिंग को और अधिक प्रोत्साहन प्राप्त हुआ जिसक` फलस्वरूप राज्य में ट्राउट मत्स्य पालको की संख्या में तथा उत्पादन में वृद्वि दर्ज की गयी। वर्ष 2019–20 में राज्य अन्तर्गत लगभग 44 मेट्रिक टन ट्राउट उत्पादन प्राप्त किया गया। राज्य अन्तर्गत ट्राउट फार्मिंग का कार्य कर रही समितियो एवं अन्य ट्राउट फार्मरो में समन्व्य स्थापित करने, इनपुट में सहायता,

विपणन में सहयोग तथा एक समान प्लेटफार्म में कार्य करने के उद्देश्य से राज्य स्तरीय ट्राउट महासंघ की भी स्थापना की गयी।

राज्य समेकित सहकारी विकास परयोजना का आरम्भ क्यों किया गया।

वर्ष 2013–14 से मत्स्य विभाग की विभिन्न संचालित योजनाओ एवं जागरूकता अभियानो से राज्य में अनेक व्यक्तियो द्वारा मत्स्य पालन को मुख्य व्यवसाय के रूप में अपनाया गया है जिसमें समितियो द्वारा भी मत्स्य पालन के कार्य किये जा रहे थे परन्तु मत्स्य पालन से जुड़ी समितियों को व्यवसायिक फार्मिंग से जोडे जाने हेतु उत्तराखण्ड में राज्य समेकित सहकारी विकास परियोजना लागू की गयी है जिससे कि समितियो को व्यवसायिक फार्मिंग हेतु रेसवेज के अतिरिक्त अन्य आवश्यक अवसंरचनाये जैसे कि सेडिमेंटेशन टैंक, रिजरवायर टैंक, उपकरण, इनपुट आदि उपलब्ध कराते हुए कलस्टर से अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त किये जा सके एवं तद्नुसार समितियो को स्वावलम्बी बनाया जा सके।

राज्य समेकित सहकारी विकास परियोजना अन्तर्गत ट्राउट फार्मिंग

उत्तराखण्ड मत्स्य विभाग न्झब्क् के अन्तर्गत सहकारी समितियो के माध्यम से राज्य में मात्स्यिकी विकास हेतु अहम भूमिका निभा रहा है। परियोजना में सहकारी समितियो के माध्यम से मत्स्य पालन से जुड़े विभिन्न पहुलओ पर कार्य किया जा रहा है। वर्तमान में UKCDP के अन्तर्गत चिन्हित जनपद चमोली, रूद्रप्रयाग, टिहरी, उत्तरकाशी, बागेश्वर एवं पिथौरागढ़ में कुल 16 सहकारी समितियॉ 16 गांव में लगभग 171 किसान ट्राउट फार्मिंग का कार्य कर रही है। ट्राउट फार्मिंग का कार्य आदर्श स्थल का चयन, जलीय उपलब्धता आदि के आधार पर ही सम्भव है एवं सामान्यतः ऐसे आदर्श स्थल दूरस्थ क्षेत्रो में जलस्रोतो के आसपास ही मिल पाते है जिसके कारण ट्राउट फार्मिंग में विभिन्न बाधायें है। साथ ही सप्लाई चेन हेतु का`ल्ड स्टोरेज एवं अन्य आधारभूत संरचनाये न होने के कारण विपणन किसानो की परेशानी का कारण है। ट्राउट समितियो में जागरूकता का अभाव, दूरस्थ क्षेत्रो में मजदूरी दरे अधिक होना ट्राउट फार्मिंग की अन्य चुनौतियॉ है।

ट्राउट फार्मिंग की सामूहिक फार्मिंग एवं मार्केटिंग

UKCDP के अन्तर्गत विभिन्न जनपदो की 16 समितियॉ ट्राउट मत्स्य उत्पादन हेतु प्रयासरत है। यहॉ पर ज्यादातर सीमांत व छोटे किसान है जो कृषि आधारित विभिन्न गतिविधियॉ से जीविकोपार्जन कर रहे है। जनपद चमोली में ल्वाणी, वाण, चलियापानी, दवेाल, धौलीगंगा, जनपद उत्तरकाशी में बंगाण, गड्डूगाढ, हरकीदून, खलाड़ी, मोरी, सिंगोट, जनपद टिहरी के हटवाल गांव, चांजी, सौंप, पगड़िया जबकि देहरादून मे ं चकराता क्षेत्र क` किसान ट्राउट फार्मिंग जैसी न्यून क्षेत्र से अधिक आय अर्जन वाली गतिविधि को अपनाने हेतु इच्छुक है। इन समितियो में ट्राउट की कलस्टर आधारित फार्मिंग की जायेगी। इसका प्रारम्भ 240 ट्राउट रेसवेजो से किया जायेगा। UKCDP के अन्तर्गत सहकारिता के माध्यम से 1000 रेसवेजो का निर्माण कर ट्राउट फार्मिंग कार्यो का विस्तार किया जायेगा। सम ुचित विपणन श्रृंखला स्थापित करते हुए उत्तराखण्ड के सीमांत क्षेत्रो हेतु यह एक लाभकारी व्यवसाय हो सकता है।

ट्राउट फार्मिंग की क्रियान्वयन योजना

- UKCDP के अन्तर्गत अगले 05 वर्षा में 1000 ट्राउट रेसवेज पर ट्राउट फार्मिंग के विस्तार की योजना है। इसके अन्तर्गत रेनबो ट्राउट की फार्मिंग की जायेगी।

- ट्राउट फार्मिंग हेतु अपेक्षित मत्स्य बीज की आपूर्ति हेतु निजी एवं राजकीय क्षेत्र में अतिरिक्त ट्राउट हैचरियॉ स्थापित की जा रही है। हैचरियो की स्थापना होने तक मत्स्य बीज की मांग एवं आपूर्ति को पूर्ण करने हेतु यूरोपियन देशो से आयात की योजना है।
- समितियो को भी आवश्यक उपकरण एवं प्रशिक्षण उपलब्ध कराते हुए ट्राउट मत्स्य बीज उत्पादन का कार्य भी कराया जा रहा है।

ट्राउट की कलस्टर आधारित फार्मिंग एवं मार्केटिंग योजना के मुख्य बिन्दु

- कलस्टर आधारित ट्राउट फार्मिंग हेतु भूमिधर किसान एवं आवश्यक जलापूर्ति संसाधनो की उपलब्धता के आधार पर चयन किया जायेगा।
- समिति एवं महासंघ के मध्य एक अनुबंध किया जायेगा। अनुबंध के अनुसार परियोजना के निर्बाध संचालन और इसकी गतिविधियों के लिए प्राथमिक मत्स्य जीवी सहकारी समिति के सदस्यों का समर्थन और अपेक्षित सहायता उपलब्ध कराया जायेगा। समितियो को तकनीकी सहायता, मत्स्य बीज, मत्स्य आहार आदि उचित मूल्यो पर महासंघ द्वारा उपलब्ध कराया जायेगा। समितियॉ उत्पादित मछलियो को महासंघ/UKCDP अन्तर्गत विकसित ब्रॉण्ड उत्तराफिश के माध्यम से विपणन करेगी।
- समितियो के अन्तर्गत होने वाले निर्माण/सुधार/संयोजन कार्यो का UKCDP के अन्तर्गत नियुक्त अभियंता/परामर्शदाता/जनपदीय नोडल अधिकारियो के माध्यम से अनुश्रवण किया जायेगा।
- समितियो के अन्तर्गत उद्यमिता मॉडल को विकसित किये जाने हेतु यदि समिति उद्यमी के साथ संयुक्त उद्यम स्थापित कर कार्य करना चाहती है तो इस हेतु भी महासंघ द्वारा समर्थन दिया जायेगा जिसके लिए पृथक अनुबंध कार्यवाही की जायेगी।
- महासंघ मछलियो के विपणन हेतु रेफरीजेरेड/इन्स्युलेटेड वाहन, संग्रहण केन्द्र, कोल्ड स्टोरेज, आईस प्लांट, प्रसंस्करण यूनिट आदि की स्थापना करेगा तथा विपणन हेतु विस्तृत कार्ययोजना तैयार करेगा।
- विपणन कार्यो हेतु UKCDP के अन्तर्गत महाप्रबन्धक/उपप्रबन्धक (विपणन) को रखा जायेगा।
- समिति ट्राउट मत्स्य उत्पादन कर निर्धारित दरों पर महासंघ को उपलब्ध करायेगी। दरों का निर्धारण UKCDP के अन्तर्गत गठित एस.एल.एच.पी.सी द्वारा किया जायेगा। एनसीडीसी के माध्यम से समिति के नाम से स्वीकृत ऋण के किश्त का समायोजन के करने के उपरान्त महासंघ द्वारा समिति को धनराशि उपलब्ध करायी जायेगी। जब और जहॉ आवश्यक हो, एस.एल.एच.पी.सी द्वारा विक्रय मूल्यों को संशोधित किया जा सकता है।
- महासंघ राज्य, जिला एवं केन्द्र सेक्टर एवं अन्य योजनाओं के माध्यम से समितियो को इनपुट में अनुदान उपलब्ध कराकर ट्राउट उत्पादन की लागत को कम कर लाभ में बढ़ोत्तरी के लिये प्रयास करेगी।
- मत्स्य पालको को प्रोत्साहन दिये जाने हेतु UKCDP परियोजना का अन्य परियोजनाओ के साथ युगिपितिकरण किया जायेगा एवं ट्राउट फार्मिंग के साथ अन्य आय सृजन वाली गतिविधियो से भी जोड़ा जायेगा।

भूमिका एवं जिम्मेदारियॉ

- इस वाणिज्यिक मॉडल एवं पूर्ण प्रक्रिया में समितियो की अहम भूमिका है। चूँकि समितियो में कुछ सदस्य नाम मात्र के सदस्य होते है, के कारण समिति के अध्यक्ष की और भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है।
- ट्राउट फार्मिंग अन्तर्गत फार्मिंग की जिम्मेदारी, श्रम एवं अन्य व्यय समिति/मत्स्य पालक स्वयं वहन करेगे।
- अनुबंध की अवधि तक समिति द्वारा महासंघ की अनुमति के बिना भूमि पर अन्य कोई कार्य नहीं किया जायेगा।
- समितियों/मत्स्य पालको को इनपुट के अन्तर्गत मत्स्य बीज एवं आहार ससमय उपलब्ध कराये जाने हेतु UKCDP समर्थन करेगा। ट्राउट उत्पादन में इनपुट लागत बहुत अधिक होने के कारण UKCDP सभी वर्षो में इनपुट हेतु सहयोग करेगा।
- समिति/मत्स्य पालको को समय–समय पर ट्राउट फार्मिंग एवं अभिनव पहलो का प्रशिक्षण उपलब्ध करायेगा।
- परियोजना के सफल संचालन हेतु जनपद स्तर, समिति स्तर, महास ंघ के स्तर पर कार्यो का निवर्हन/जिम्मेदारियॉ, कार्यक्रम निदेशालय स्तर पर तय की गयी है।
- 01 कलस्टर अन्तर्गत 20 रेसवेज का निर्माण किया जायेगा जिनसे न्यूनतम 20 मेट्रिक टन वार्षिक ट्राउट उत्पादन प्राप्त किये जाने का लक्ष्य है। वर्तमान समय में ट्राउट मछली की औसत विक्रय दर रू० 550/– है। समितियॉ यदि अपने सदस्यो के माध्यम से फार्मिंग कार्यो में श्रमदान करती है तो मजदूरी पर होने वाले व्यय को न्यून कर अधिक लाभ प्राप्त कर सकती है।
- मत्स्य पालको को प्रोत्साहन दिये जाने हेतु UKCDP परियोजना का अन्य परियोजनाओ के साथ युगिपितिकरण किया जायेगा एवं ट्राउट फामिंग के साथ अन्य आय सृजन वाली गतिविधियो से भी जोड़ा जायेगा। साथ ही सभी वर्षो मे ं इनपुट हेतु विभिन्न स्रोतो से अनुदान उपलब्ध करायेगा जिससे कि समिति/मत्स्य पालक के लाभ में वृद्वि की जा सके।
- एक रेसवेज में औसतन रू० 2.50–रू० 3.00 लाख का इनपुट व्यय करने पर रू० 4.00 – रू० 5.00 लाख का उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है अर्थात रू० 1.50 से रू० 2.50 लाख का शुद्व लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

सामान्यतः पूछे जाने वाले प्रश्न

1) ट्राउट फार्मिंग हेतु साईट का चयन कैसे करे :

चयन की जाने वाली भूमि 4000 फीट से अधिक ऊॅचाई पर अवस्थित होनी चाहिए। साईट के निकट प्राकृतिक जलस्रोत जिसमें वर्षभर जल की उपलब्धता हो, होना चाहिए। जल का तापमान वर्षभर 5–18 डिगरी सेल्सियस की तापमान सीमा के अन्दर होना चाहिए।

2) मत्स्य बीज कहॉ से प्राप्त कर सकते है

राजकीय एवं निजी क्षेत्र में विभिन्न हैचरियॉ क्रियाशील है, जहॉ से ट्राउट मत्स्य बीज प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान में जनपद चमोली में मत्स्य प्रक्षेत्र बैरांगना एवं मत्स्य प्रक्षेत्र तलवाड़ी तथा जनपद रूद्रप्रयाग के धारकुड़ी में ट्राउट ब्रूड बैंक जो राजकीय मत्स्य प्रक्षेत्र है, मत्स्य बीज प्राप्त किया जा सकता है।

3) मत्स्य आहार कहा से प्राप्त कर सकते है

राजकीय एवं निजी क्षेत्र में विभिन्न मत्स्य आहार निर्माता है। वर्तमान में जिला सहकारी मत्स्य विकास एंव विपणन फैडरेशन लि० से मत्स्य आहार प्राप्त किया जा सकता है।

4) उत्पादित ट्राउट का विक्रय कहॉ किया जायेगा

स्थानीय व्यक्तियो, मछली विक्रेता के अतिरिक्त उत्तराफिश (आउटलेट), फ्रेंचाइजी, होटल, रेस्टॉरेंट आदि में मछली का विक्रय किया जायेगा।

Filename:	Final Trout Scheme Document
Directory:	C:\Users\aman\Documents
Template:	C:\Users\aman\AppData\Roaming\Microsoft\Templates\Normal.dotm
Title:	
Subject:	
Author:	Windows User
Keywords:	
Comments:	
Creation Date:	23-Aug-22 11:56:00 AM
Change Number:	17
Last Saved On:	24-Aug-22 4:12:00 PM
Last Saved By:	Windows User
Total Editing Time:	103 Minutes
Last Printed On:	24-Aug-22 4:14:00 PM

As of Last Complete Printing

Number of Pages:	9
Number of Words:	2,800 (approx.)
Number of Characters:	15,960 (approx.)